3) Q. हिंदी पत्रकारिता की उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालें।

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व के पत्र - पत्रिकाओं पर प्रकाश डालें।

उ. भारत में हिन्दी पत्र - पत्रिकाओं का उद्भव, हिन्दी के प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तंड' से हुआ है, जिसके संपादक पंडित युगल किशोर थे। पत्र - पत्रिकाओं के उद्भव के विषय में कहा जाए तो यह आदि और अंत तथा आरंभ और समाप्ति की तरह ही जन्म - मृत्यु का निर्माण और विध्वंस दोनों प्रक्रियाएँ परस्पर विरोधी होते हुए भी एक - दूसरे के पूरक हैं। सृष्टि का प्रत्येक तत्व उत्पन्न होकर विकास के विभिन्न सोपानों से गुजर कर नष्ट हो जाता है। सूर्य - चन्द्रमा, पृथ्वी तथा नक्षत्रों की एक निश्चित आयु होती है और फिर नष्ट हो जाता है। सृष्टि का यह शाश्वत नियम है कि धर्म और विज्ञान दोनों अपने - अपने दृष्टिकोण से व्याख्या करना। पत्र - पत्रिकाओं के विषय में यह देखा जाए तो यह नियम अपवाद नहीं है, बल्कि निर्विवाद रूप से स्वीकार्य है कि आधुनिक पत्र - पत्रिकाएँ एक विराट रूप की स्वामिनी है। परंतु अतीत में इसका स्वरूप ऐसा ही रहा होगा जैसा कि वर्तमान में है। इस संदर्भ में कुछ तथ्य यहाँ प्रस्तुत करना आवश्यक है —

शिलालेख — कागज तथा मुद्रण के आविष्कार के पूर्व पाषाण खण्डों, भोजपत्रों आदि पर लेखन द्वारा शब्द और अर्थ को अभिव्यक्ति दी जाती थी। सूचनाओं आदि का सम्प्रेषण नगाड़े बजाकर मौखिक रूप से किया जाता था। प्राचीनता के आदि युग में दोनों साधन सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति के लिए उपलब्ध थे। पत्र – पत्रिकाओं के आरंभिक स्रोत शिलालेख को स्वीकार किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त चित्रलिपि तथा मिट्टी पर लिखी गई कुछ गणितीय संबंधी सामग्री उपलब्ध थी।

इस प्रकार शिलालेख को पत्र – पत्रिकाओं का ही रूप कह सकते हैं क्योंकि प्राचीनकाल में शिलालेख का मुख्य उद्देश्य अवश्य ही उपलब्धियों को जनमानस तक पहुँचाना रहा होगा। भिन्न-भिन्न देशकाल वातावरण में राजाओं एवं सामंतों का मुख्य उद्देश्यों अभिलेखों के माध्यम से जीवन के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक घटनाओं को स्थायी बनाना था। अशोक सम्राट का एक लेख प्रमाण पत्र में धर्म अभिलेख और स्थायी होने की परंपरा विश्व इतिहास में दृष्टिगोचर होती है। 1400 ई. पू. एक अभिलेख की प्राप्ति हुई जिसमें ऋग्वैदिक देवताओं इन्द्र, वरुण आदि का उल्लेख किया हुआ था। इस अभिलेख द्वारा भारतीय आर्यों के भारत से पृथ्वी के अन्य स्थानों पर बसना आदि का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त सम्राट अशोक द्वारा बनवाये गए धार्मिक, प्रशासनिक,

संस्कृतिक अभिलेख संपूर्ण भारत में भारी संख्या में प्राप्त होते हैं। अशोक के शिलालेखों में धर्म के सिद्धांतों तथा प्रजा कल्याण के कार्यों का विवरण मिलता है। इसके साथ - साथ वे अपने आदेशों को भी शिलालेख पर अंकित करवा लिए थे। इसके बाद भारत के अन्य राजाओं ने शिलालेखों का निर्माण करवाया जो निम्नलिखित हैं :—

① सिंचाई व्यवस्था की शिलालेख
② ब्राह्मी खरोष्ठी तथा संस्कृत के अभिलेख
③ मौर्यकाल के अभिलेख
④ शुंगकालीन शिलालेख
⑤ कुषाणों, उत्तराधिकारी तथा समकालीन राजाओं के द्वारा खुदवाये गए अभिलेख

इन अभिलेखों के माध्यम से तत्कालीन अनेक सूचनाएँ तथा महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है जैसा कि पत्र - पत्रिकाओं को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया गया है। पत्र पत्रिकाएँ सूचना का सशक्त माध्यम है ठीक उसी प्रकार प्राचीनकाल के ये सारे शिलालेख पत्र - पत्रिकाओं की कसौटी पर खरे उतरते हैं। विभिन्न राज्यों की सूचनाओं को इन शिलालेखों के माध्यम से जनता तक पहुँचाया जाता था। अशोक के शिलालेख इस तथ्य का प्रमाण है। विद्वानों के अनुसार पत्र - पत्रिकाओं की शैशवावस्था शिलालेख को माना गया है। प्रमाण के रूप में कुछ ~~तथ्य~~ तथ्य इस प्रकार है :—

डॉ. संजीव भानावत के अनुसार :—

"जब राजा को जनता के लिए कोई संदेश प्रसारित करना होता है तो वह डुगडुगिया बजाकर या शिलालेख के माध्यम से इस कार्यों को पूरा करते थे।"

मनोज कुमार पटैरिया के अनुसार :—

"घंटे वाले शिलालेख को चर्मशाला, सूचना आदि मुद्रित अखबार के पूर्वज कहा जा सकता है।"

मृदुला वर्मा के अनुसार :—

"जब तक छापेखाने का आविष्कार नहीं हुआ तब तक लिखकर चौराहों, मंदिरों तथा शिलालेखों में सरकारी आदेश अंकित किए जाते थे।"

उपर्युक्त मतो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिलालेखों को जनसूचना के आरंभिक माध्यम के रूप में मान्यता देना उचित है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिलालेख आधुनिक पत्र-पत्रिकाओं तथा जनसंचार के अन्य साधनों के प्राचीन संस्करण है।

विश्व के इतिहास में

सर्वप्रथम समाचार पत्र 'जुलियस सीजर' के काल में निकाले गए थे। इतिहासकारों के अनुसार 'एक्टा डायना' (जिसका अर्थ है हाथ से लिखा हुआ) नामक दैनिक पत्र का प्रारंभ करवाया था। इसके पश्चात भारत में मुगलकाल के शासन में समाचारों को व्यक्त करने के लिए समाचार पुस्तिका को उपलब्ध कराया। मुगलों की अंतिम डायरी उर्दू अखबार थी। इसमें भी पत्र - पत्रिकाओं का स्वरूप विद्यमान था।

पाश्चात्य देशों में 17 वीं शताब्दी में जब कागज और मुद्रण प्रौद्योगिकी का विकास हुआ, तब पत्र - पत्रिकाओं को एक नया आकार मिला जिसमें 1961 ई. में ब्रिटेन में प्रकाशित "न्यूज ऑफ कैट" नामक पत्र - पत्रिकाओं ने नयी दिशा प्रदान की। इसके पश्चात 1609 ई. में समाचार पत्रों का उदय हुआ जिसमें 'एविसा' जर्मनी तथा 'रिलेशन' स्ट्रास वर्ग से प्रकाशित हुआ।

सन 1620 ई. में अंग्रेजी का पहला समाचार पत्र 'विकली न्यूज' प्रकाशित हुआ जो 23 मई 1622 को यह सप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होना शुरू हुआ।

11 मार्च 1702 ई. को पहला ~~अंग्रेजी~~ अंग्रेजी दैनिक पत्रिका 'कौरार' प्रकाशित हुआ। जिससे 1709 ई. में पत्र - पत्रिकाओं की दिशा में नये परिवर्तन हुए।

भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व ही 1557 में गोवा में

प्रेस की स्थापना हो चुकी थी जिसमें सबसे पहले ईसाई धर्म की पुस्तकें मलयालम भाषा में छपी।

इसके बाद 1662 ई. में बम्बई में प्रेस की स्थापना हुई। 1762 ई. में कलकत्ता के टाउनसिल हॉल में नोटिस लगवाया गया जो आम जनताओं के लिए थी। लेकिन अंग्रेजी सरकार ने खतरा महसुस कर उसे जहाज में लदवा कर यूरोप भेज दिया जिससे पत्र - पत्रिकाओं की शुरूआत होते - होते रूक गयी।

1774 ई. में 'इंडिया गजट' कलकत्ता से प्रकाशित किया गया जो भारत का पहला सरकारी गजट था। 1780 ई. में ~~जेम्स~~ जेम्स अगस्टस हिक्की ने 'बंगाल गजट' नामक पत्रिका की शुरूआत कर भारतीय पत्र - पत्रिकाओं की नींव डाली। हिक्की का कहना था कि — "मुझे अखबार छपाने का विशेष इच्छा नहीं है और न ही ~~मुझमें~~ मुझमें इसकी योग्यता है। कठीन परिश्रम करना मेरे स्वभाव में नहीं है तब भी मुझे अपने शरीर को कष्ट देना स्वीकार है। ताकि मैं मन और आत्मा की स्वाधीनता को स्वीकार कर सकूँ। 'बंगाल गजट' मुख्यतः दो पृष्ठों की थी जो 12 इंच लम्बा और 8 इंच चौड़ा था। इसमें विशेष कर वे स्वयं लिखा करते थे।

1780 ई. में कलकत्ते के "विट्र विट्" के द्वारा 'इंडियन' पत्रिका निकाला गया। यह पत्रिका कभी सरकार के मर्जी के विरुद्ध नहीं गया इसलिए यह पत्र लगातार 30 वर्षों तक छपता रहा।

मुंबई मे 'हरकारा' नामक पत्रिका का शुरुआत हुआ। 1785 ई. मे मद्रास मे 'मद्रास कुरियर' पत्रिका का श्री गणेश हुआ। भारतीय भाषा मे पहला पत्र बंगाल भाषा मे छपा, जिसका नाम 'दिग्दर्शन' पत्रिका था। यह बंगला तथा अंग्रेजी मे छपा। 1821 ई. मे फारसी मे पहला साप्ताहिक 'मिरात-उल' अखबार प्रकाशित किया गया। उस समय के स्थिति का वर्णन पत्रकारों के प्रति सरकार के व्यवहार के बारे मे प्रसिद्ध पत्रकार स्वर्गीय हेमेन्द्र प्रसाद घोष लिखा करते थे। तत्कालीन सरकार समाचार पत्रों के प्रति संकालु थी और हमेशा मामुली कारणों से उन पर चोट करने के लिए उद्दत रहती थी। पत्र की स्वतंत्रता पर प्रहार करने के हर मौके का उपयोग करती थी।

1828 ई. मे लार्ड विलियम बेंटिक के आने पर प्रेस कानुन मे लचिलापन आया। उन्होंने कहा कि —

"मै समाचार पत्रों को मित्र मानता हूँ और सुशासन मे सहायक मानता हूँ।"

1830 ई. मे केवल बंगाल मे भारतीय भाषाओं को सोलह (16) पत्रिकाएँ तथा अंग्रेजी भाषा मे 33 पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की गई। विलियम बेंटिक के बाद मेटकॉफ गवर्नर जनरल बना। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता की दिशा मे और विशेष पहल की। 1836 ई. मे मेटकॉफ

के आगमन को भारतीय समाचार पत्रों का मुक्तिदाता के के नाम से जाना जाता है।

हिन्दी समाचार पत्रों का जनमत बनाने एवं पत्रकारिता के चरित्र निर्वाह में उल्लेखनीय योगदान रहा है। इनका लक्ष्य था सुधारवादी, राष्ट्रीय तथा जागृति मूलक। अंत में कलकत्ते से जो पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही थी वह 'उदन्त मार्तंड' (1826 ई.) के नाम से साप्ताहिक पत्र पत्रिकाएँ के रूप में आया। जिसका प्रकाशन युगल किशोर ने किया। निश्चय ही यह समाचार पत्र एक सहमती और बलवती इच्छा का प्रकाशन था। यह हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र के रूप में आया। इसी के माध्यम से भारत में हिन्दी पत्र - पत्रिकाओं का श्री गणेश हुआ। यह पत्रिका सरकारी सहायता के अभाव के कारण तथा ग्राहकों की कमी के कारण अधिक समय तक ब्रिटिश सरकार से लड़ नहीं पायी और अल्पआयु में ही यह पत्रिका बंद हो गयी। 11 दिसंबर 1827 को बड़े खेद के साथ इसे बंद कर दिया गया और 1829 ई. में कलकत्ता से 'बंगदूत' पत्रिका प्रकाशित हुआ जो हर रविवार को प्रकाशित होता था। यह पत्रिका बंगाली, फारसी अंग्रेजी तथा हिन्दी इन सभी भाषाओं में प्रकाशित हो रहा था।

1835 ई. में काशी से 'बनारस' अखबार का प्रकाशन हुआ। यह हिन्दी प्रदेश का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र था जिसका प्रकाशक राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द थे। यह पत्र हिन्दी लिपि में था, लेकिन उर्दू भाषा का प्रयोग

होता था।

1835 के बाद 1848 ई. में इंदौर से मालवा अखबार का प्रकाशन हुआ। 1850 में गुलाल किशोर ने समाचार 'मार्तंड' पत्रिका प्रकाशित किया। इसी पत्रिका के माध्यम से काशी में कुछ सुधार किये गए।

1850 के बाद 1857 स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात बंगाल और हिन्दी प्रदेश के अनेक महत्वपूर्ण पत्र निकले। जिसमें बुद्धि प्रकाश, सर्वहित कारक प्रजा हितैषी, तत्व बोधनी (1850), सत्य दीपक तथा वितांत विलास आदि था।

1857 के बाद अंग्रेजों द्वारा लूट एवं आर्थिक शोषण से भारतीय जनता त्रस्त हो उठे। अंततः गुलामी से मुक्ति पाने के लिए आतुर भारतीय लोगों ने पत्र - पत्रिकाओं का सहारा लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आज तक पत्र - पत्रिकाओं का संघर्ष जारी है। इस बीच कई बार पत्र - पत्रिकाओं पर सरकार द्वारा बंधन लगाए गए। लेकिन तमाम विरोधों एवं संघर्षों के बाद भी भारतीय पत्रकारिता अविच्छिन्न भाव से प्रकाशित होती चली आ रही है।